BA (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट- थर्ड
पत्रहीन नग्नगाछ
व्याख्या – I

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Army)

सप्रसंग व्याख्या (पत्रहीन नग्नगाछ)!-

1\. "बाँसक छाहरि
एकोटा घास नहि जनमत
बाँसबिट्टीक छायातर
कोनो गा अंकुर – कबूतरा बीजक उद्भिद
किंवा कुश गाछक पे पी"

प्रस्तुत पद्यांश 'यात्रीजीक रचित 'पत्रहीन नग्नगाछ' पोथीसँ 'बाँसक छाहरि' सँ लेल गेल अछि। बाँसक छाहरि केहन विरान होइत अछि जे कोनो गा घास नहि जनमैत अछि। कबूतक अंकुर नहि फुटैत अछि, कोनो चिड़िक बीया कुनतो पर नहि जनमैत छैक। बाँसक छाहरि मे बो गाछ वृक्षक वृद्धि नहि होइत अछि। यात्रीजी जन भावनाक कवि छलाह आ गरीब दीन दुखियाक शुभ चिंतक संगहि साम्यवादी विचारधाराक पोषक कवि छलाह। बाँस पैघ होइत अछि। कविक कथय अछि पैघ धनिकक छायातर कोनो

Scanned by TapScanner

शारीरिक विकास नहि भऽ सकैत अछि । ते एहन विवाहक संगति सँ दूर रहब हितमे अछि । सब देखैत छथि बालक छाँहमे कहाँ कतुक विकासमे होइत छैक ।

"

2. दुइ देह छथि, एक परिस्थिति
एक प्राण छथि साँवर-गोर
किए कानसँ ओ घहरत नूपुर
राधा किए बहओती नोर । "

प्रस्तुत पद्यांशक रचनाकार छथि वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जे 'पत्रहीन नग्न गाछ' मे संकलित कविता 'साओन' सँ लेल गेल अछि। साओन शीर्षक कवितामे साओन-दुहावनक बृहत चित्रण भेल अछि। एहि मासमे धरतीक समस्त अंग-उपअंग फुदइत रहैत अछि। बाध-बोनमे हरियारी पसरल रहैत अछि। प्रकृति देवीक आनन्दक गीत गबैत रहैत अछि। एहि साओन मासमे हमरा सभ राधा-कृष्णकेँ झूला पर झुलबैत छी। कवि राधाकृष्णक चित्रण कैलनि अछि। समस्त प्रकृति आनन्दमय अछि तखन राधा कृष्णक वियोगमे किएँ बहओती नोर। राधा-कृष्ण त एकहि प्राण अछि, दु देह तँ हुनक लौकिक रूप थिक। ओ त एकहि प्राणके वास करैत छथि। आनक सुख-सोहाग सँ किए ककरो दुःख होइत? भेल-मोर कृष्णक डारिमे मचकी

③

बान्हल अछि, ओहि पर भाव-विभोर, प्रेम विभोर
जगतक अधिष्ठाता आ अधिष्ठात्री झुला झुलावि।
राधा संग नन्दकिशोर भेल भाव-विभोर, झुला झुलावि
नन्दकिशोर। ई दिव्य अवतारी रामाँ मानक
प्रसन्न जन-जन मे आनन्दभाव। हिनक नयन
दर्प अछि बाध-बानक दाङ्गि छै। धरती
माता आनन्द सँ झुमि रहल छथि।

Samyak Kumar